W : www.vsajaipur.com | E : vsajaipur@gmail.com M. : +91 9460356652,
Add. : 84, Krishna Vihar, Behind Narayan Niwas, Gopalpura Bypass, Jaipu
/vsajaipur | /vsajaipur | /vidyashreeacademy | /vs

Class 10 Subject Hindi (kshitij) Topic ch 3

प्रश्न/उत्तर करो।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न-

प्रश्न 3. कवि के अनुसार किसके अभाव में कोई भी कार्य सिद्ध नहीं हो सकता है?
उत्तर-कवि के अनुसार बल, पराक्रम और हिम्मत के अभाव में कोई भी कार्य सिद्ध नहीं हो सकता है।

प्रश्न 4. दूध एवं नीर (जल) को कौन अलग-अलग कर सकता है?
उत्तर-दूध एवं जल के मिल जाने पर उन्हें राजहंस अलग कर सकता है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 5. कवि के अनुसार किन-किन का उपाय पहले ही कर लेना चाहिए?

उत्तर-वनाग्नि को रोकने, शत्रुओं को रोकने तथा रोग को दबाने का उपाय पहले ही कर लेना चाहिए।

प्रश्न 6. कौनसी जगह चन्दन के वृक्ष बहुतायत में पाये जाते हैं?

उत्तर-मलय-पर्वत पर सब ओर चन्दन के वृक्ष बहुतायत में पाये जाते है।

प्रश्न 7. किसके घाव कभी नहीं भरते हैं।

उत्तर-जीभ अर्थात् बुरे वचनों से हुए घाव कभी नहीं भरते हैं।

Scanned with CamScanner

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

प्रश्न 8. संकलित अंश के अनुसार किस नगर में नहीं रहना चाहिए?

उत्तर-कवि कृपाराम के अनुसार जिस नगर या गाँव में कोई भेद नहीं माना जाता है तथा लोग गुणों व अवगुणों के विषय में उनकी अच्छाई और बुराई को जानकर भी संभलने का प्रयास नहीं करते हैं, उस नगर या गाँव में नहीं रहना चाहिए। अर्थात् गुणों का आदर तथा अवगुणों का निरादर करने वाले स्थान पर ही रहना चाहिए।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 9. 'अस्वाभाविक मित्रता के घातक परिणाम होते हैं।' संकलित अंश के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-मित्रता सदा स्वाभाविक रूप में होनी चाहिए। जिसका स्वभाव विरोधी या शत्रुता रखने वाला हो, उससे मित्रता नहीं हो सकती है, अपितु उससे प्राण हानि का भय रहता है। जैसे बिल्ली और चूहे में मित्रता होना या उनका एक ही स्थान पर साथ-साथ रहना सम्भव नहीं है। उनमें कभी मित्रता नहीं हो सकती, क्योंकि बिल्ली चूहे को मारकर खा जाती है, यह उसका जन्मजात स्वभाव है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 10. 'जन्मजात प्रवृत्तियों में बदलाव असम्भव है।' संकलित अंश के आधार पर स्पष्टं कीजिए ।

उत्तर-दूध में मधुरता रहती है, यह उसका प्राकृतिक गुण या स्वभाव है। इस पकाया गया मीठा ही होता है। परन्तु आक या आकड़ा जन्मजात कडन कारण दूध होता है, उसे चाहे कितना भी मीठा बनाने का प्रयास किया जावे, वह कडुवा है। इससे सिद्ध हो जाता है कि जन्मजात प्रवृत्तियों में जरा भी बदलाव सम्भव नहीं है।

Scanned with CamScanner

निबन्धात्मक प्रश्न-

प्रश्न 11. संकलित अंश के आधार पर हिम्मत एवं पराक्रम के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-'राजिया रा सोरठा' में चारण कवि कृपाराम खिड़िया ने बल, पराक्रम एवं हिम्मत के महत्त्व का सुन्दर निरूपण किया है। इस संसार में जिसमें बल है, जो हिम्मत रखकर साहसी काम कर सकता है तथा विपरीत दशा में पराक्रम दिखाकर आगे बढ़ पाता है, उसका प्रत्येक कार्य सफल रहता है। केवल हो-हल्ला करने से पराक्रमी काम नहीं हो पाता है। उदाहरण के लिए सियार वन में तरह-तरह की आवाजें करते हैं, परन्तु उनमें जरा भी हिम्मत नहीं रहती है, जबकि सिंह अपनी शक्ति के कारण. ही मृगराज तथा वनराज कहलाता है। शेर अपने बल-पराक्रम से ही पशुओं का राजा बना है और उससे सभी पशु एवं सभी प्राणी भयभीत रहते हैं। इसी प्रकार जो व्यक्ति बलशाली, हिम्मत रखने वाला और पराक्रमी होता है, वह इस धरती का राजा तथा नरेश बन जाता है, उसके सारे काम आसानी से हल हो जाते हैं और सभी लोग उसे आदर देते हैं

Scanned with CamScanner

व उसकी आज्ञा का पालन करते हैं । इससे स्पष्ट हो जाता है कि संसार में बल, पराक्रम और हिम्मत रखने से ही सम्मान मिलता है तथा जीवन में सफलता प्राप्त होती है। हिम्मत के बिना जीवन निरर्थक बन जाता है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 12. संकलित अंश के आधार पर वाणी के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-चारण कवि कृपाराम खिड़िया ने वाणी का महत्त्व बताते हुए लहा है कि कोयल की वाणी मधुर लगती है, इस कारण सभी उससे अनुराग रखते हैं, परनतु कौए का स्वर कडुवा लगता है, कर्कशता के कारण उसका सब अनादर करते हैं। इस कारण सामाजिक व्यवहार में वाणी का प्रयोग सदा मधर या स्नेहपूर्ण करना हितकार रहता है। जो व्यक्ति सोच -विचार कर, अवसर के अनुकूल और विवेकसम्मत बात कहता है, उसकी वाणी में स्वाभाविक सहजता और मिठास रहती है। कर्कश तथी बिना सोचे-विचारे कही गई बात सदा कडुवी व अप्रिय लगती है। रसना के गुणा अर्थात् वाणी के सद्व्यवहार से ही कोई व्यक्ति मित्र बन जाता है तो कोई शत्रु बन सकता है। आपसी प्रेम-व्यवहार के लिए वाणी का विशेष महत्त्व है। मधुर वचना से कठोर हृदय व्यक्ति को भी अनुकूल किया जा सकता है, क्रोधी को शान्त तथा कजूस किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

क्रोधी को शान्त तथा कजूस किया जा सकता है। इसीलिए सारभी सुतकक ने जो को आमूल्य उपहार अन्य प्राणियों की अपैक्षा मनुष्य में कह ईस्कर को किशेष देन है। अकसदानुजगूल एवं र का व्यवहर करने चाहिए।

Scanned with CamScanner